Structure of the UG Programme
The Semester-wise and Broad Course Category-wise Distribution of credits of the Undergraduate Programme:

Semester	Discipline Specific Courses - Core	Minor	Inter-disciplinary courses	Ability Enhancement courses (language)	Skill Enhancement courses /Internship /Dissertation	Common Value-Added Courses	Total Credits
I	साहित्यालोचन HIN011010 (5)	भाषा एवं साहित्य परिचय HIN021010 (4)	MD (3)	AEC-ENG/HIN 041010 (2)	SEC (3)	UI (3)	20
II	आदि एवं मध्यकालीन काव्य HIN011020(5)	हिन्दी काव्य-एक HIN021020(4)	MD (3)	AEC-ENG/HIN 041020 (2)	SEC (3)	EVS (3)	20
	Students exiting the programme after securing 40 credits will be awarded UG Certificate in the relevant Discipline /Subject provided they secure 4 credits in work based vocational courses offered during summer term or internship / Apprenticeship in addition to 6 credits from skill-based courses earned during first and second semester.						40
III	आधुनिक कविता -एक HIN012010 (4) कथा साहित्य HIN012030 (4)	हिन्दी कथा संसार HIN022010 (4)	MD (3)	AEC-ENG/HIN 042010(2)	SEC (3)		20
IV	आधुनिक कविता -दो HIN012020(4)	हिन्दी काव्य-दो HIN022020 (4)	-	AEC-ENG/HIN 042020(2)			20

	प्रयोजनमूलक हिन्दी HIN012040(5) निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं HIN012060(5)						
	Students exiting the programme after securing 80 credits will be awarded UG Diploma in the relevant Discipline /Subject provided they secure additional 4 credit in skill based vocational courses offered during first year or second year summer term.						80
V	हिन्दी साहित्य का इतिहास - एक HIN013010(5) अनुवाद अध्ययन HIN013030(5) भारतीय साहित्य HIN013050(4)	कथेतर गद्य HN023010(4)	-	-	Internship (2)	-	20
VI	हिन्दी साहित्य का इतिहास - दो HIN013020(4) हिन्दी नाटक और एकांकी HIN013040(4) भारतीय एवं पाश्चात्य	हिन्दी नाटक और एकाँकी HIN023020(4)	-	-	-	-	20

	साहित्य सिद्धांत HIN013060(4) भाषा विज्ञान HIN013080 (4)						
	Students who want to undertake 3-year UG programme will be awarded UG Degree in the relevant Discipline /Subject upon securing 120 credits						120
VII	HIN014010	HIN024010	-	-	-	-	20
VIII	HIN014020	HIN024020	-	-	-	-	20
IX	HIN015010	HIN025010					

<table>
<tr><td>X</td><td>HIN015020</td><td>HIN025010</td><td></td><td></td><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td colspan="6">Students who want to undertake a 4-year UG programme will be awarded UG Hons. /Hons. With research Degree in the relevant Discipline/Subject upon securing 160 credits</td><td></td></tr>
</table>

प्रथम समसत्र

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **MAJOR**
Name of the Course: **साहित्यालोचन HIN011010 (credit 5)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है। जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का आधार भी है। किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, हिंदी का क्षेत्र विस्तार: हिंदी क्षेत्र, अन्य भाषा क्षेत्र, हिंदी की उपभाषाएँ, तथा बोलियों का सामान्य परिचय करवाने के उद्देश्य से तैयार किया गया। हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective

हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। भाषा की परिभाषा, भाषा की विशेषताएँ उसका विकासत्मक अध्ययन, हिन्दी का विस्तार क्षेत्र, हिन्दी की उपभाषा तथा बोलियों से परिचय करवाने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। साहित्य एवं आलोचना की परिभाषा तथा स्वरूप से अवगत कराते हुए साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ तथा पारंपरिक साहित्याशास्त्र का परिचयात्मक ज्ञान कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिंदी भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष से अवगत होंगे।
2. हिन्दी भाषा का विकासात्मक स्वरूप से परिचित होंगे ।
3. हिन्दी भाषा की उपभाषाएँ, बोलियों तथा उसका विस्तार क्षेत्र से विद्यार्थी परिचित होंगे ।

4. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होगी ताकि वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।
5. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।
6. पारंपरिक साहित्याशास्त्र का परिचयात्मक ज्ञान हो सकेगा।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

साहित्यालोचन HIN011010 - MAJOR (5)

इकाई 1:-

- भाषा की परिभाषा, भाषा की विशेषताएँ
- हिंदी भाषा का विकासात्मक अध्ययन

इकाई 2:-

- हिंदी का क्षेत्र विस्तार: हिंदी क्षेत्र, अन्य भाषा क्षेत्र
- हिंदी की उपभाषाएँ, बोलियों का सामान्य परिचय।

इकाई 3:-

- साहित्य- परिभाषा, स्वरूप, अवधारणा
- आलोचना- स्वरूप, परिभाषा, विशेषताएं
- साहित्य अध्ययन की दृष्टियां – ऐतिहासिक-सामाजिक दृष्टि, मनोवैज्ञानिक दृष्टि, समाजशास्त्रीय दृष्टि

इकाई 4:-

- साहित्यिक विधाएं -महाकाव्य,खंड काव्य,कविता,उपन्यास,कहानी,नाटक,निबंध,अन्य गद्य विधाएं

इकाई 5:-

- पारंपरिक साहित्यशास्त्र – रस,अलंकार,शब्द -शक्ति,काव्य गुण,छंद

अनुशंसित पुस्तकें

1. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. भाषा विज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी
3. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ धीरेन्द्र वर्मा
4. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ गोपाल रॉय
5. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप- हरदेव बाहरी
6. हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी
7. साहित्य सहचर- हजारिप्रसाद द्विवेदी
8. भारतीय काव्यशास्त्र – योगेंद्र प्रताप सिंह
9. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्यदेव चौधरी

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **MINOR**
Name of the Course: **भाषा एवं साहित्य परिचय-HIN021010 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है। जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का आधार भी है। किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, हिंदी का क्षेत्र विस्तार: हिंदी क्षेत्र, अन्य भाषा क्षेत्र, हिंदी की उपभाषाएँ, तथा बोलियों का सामान्य परिचय करवाने के उद्देश्य से तैयार किया गया। हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective

हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। भाषा की परिभाषा, भाषा की विशेषताएँ उसका विकासत्मक अध्ययन, हिन्दी का विस्तार क्षेत्र, हिन्दी की उपभाषा तथा बोलियों विभिन्न साहित्यिक विधाओं का परिचय करवाने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम तैयार

किया गया है। भाषा संबंधी कौशल का विकास, उच्चारण, वर्तनी और लिपि तथा पारंपरिक साहित्याशास्त्र का परिचयात्मक ज्ञान कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिंदी भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष से अवगत होंगे।
2. हिन्दी भाषा का विकासात्मक स्वरूप से परिचित होंगे ।
3. हिन्दी भाषा की उपभाषाएँ, बोलियों तथा उसका विस्तार क्षेत्र से विद्यार्थी परिचित होंगे ।
4. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।
5. विभिन्न साहित्यिक विधाओं से परिचय हो सकेगा।
6. पारंपरिक साहित्याशास्त्र का परिचयात्मक ज्ञान हो सकेगा।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

<u>भाषा एवं साहित्य परिचय</u> HIN021010 - MINOR (4)

इकाई 1:-

- भाषा की परिभाषा, भाषा की विशेषताएँ, हिंदी भाषा का विकासात्मक अध्ययन

इकाई 2:-

- हिंदी का क्षेत्र विस्तार: हिंदी क्षेत्र, अन्य भाषा क्षेत्र, हिंदी की उपभाषाएँ, बोलियों का सामान्य परिचय।

इकाई 3:-

- साहित्य- परिभाषा, स्वरूप, अवधारणा
- साहित्यिक विधाएं -महाकाव्य,खंड काव्य,कविता,उपन्यास,कहानी,नाटक,निबंध,अन्य गद्य विधाएं

इकाई 4:-

- पारंपरिक साहित्यशास्त्र – रस,अलंकार,शब्द -शक्ति,काव्य गुण,छंद

अनुशंसित पुस्तकें

1. भाषा विज्ञान की भूमिका – आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. भाषा विज्ञान – डॉ भोलानाथ तिवारी
3. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ धीरेन्द्र वर्मा
4. हिन्दी भाषा का विकास – डॉ गोपाल राय
5. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप- हरदेव बाहरी
6. हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी
7. साहित्य सहचर - हजारीप्रसाद द्विवेदी
8. भारतीय काव्यशास्त्र – योगेंद्र प्रताप सिंह
9. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्यदेव चौधरी

Course Structure/Syllabi

क्रेडिट 2

Type of Course: CC-1 (MIL)
Name of the Course: **हिन्दी व्याकरण- HIN041010** (क्रेडिट 2)
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है । जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का आधार भी है । किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, व्याकरणिक संरचना, वाक्य निर्माण का बोध कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है । विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है ।

Programme/course objective

भाषा और व्याकरण का बहुत गहरा संबंध है। भाषा प्रवाहमयी होता है और व्याकरण इस प्रवाह को नियंत्रित करने का काम करता है। इस पत्र को विद्यार्थियों में सामान्य हिन्दी व्याकरण से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति, भाषा संबंधी कौशल का विकास, उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान विकसित करना पत्र का लक्ष्य होगा। शब्दों के व्याकरण कोटियों तथा व्याकरण व्यवहार से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पत्र का मुख्य लक्ष्य होगा।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving.

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. भाषा तथा व्याकरण के अंर्तसंबंध को समझ सकेगें।
2. भाषा के शुद्ध उच्चारण, सामान्य लेखन, रचनात्मक लेखन तथा तकनीकी शब्दों से अवगत होंगे।
3. शब्दों के व्याकरण कोटियों तथा व्याकरण व्यवहार – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से परिचित हो सकेगें।
4. वाक्य रचना, वाक्य भेद, वाक्य रूपांतरण, वाक्यगत अशुद्धियाँ को समझ सकेंगे।
5. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिंदी व्याकरण HIN041010 - CC 1 (MIL) (2)

इकाई 1:-

- व्याकरण की परिभाषा, महत्व, भाषा और व्याकरण का अंतःसंबंध ,ध्वनि, वर्ण और मात्राएं
- शब्दों के भेद एवं शब्द निर्माण - तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द,उपसर्ग,प्रत्यय ,संधि और समास

इकाई 2:-

- शब्दों की व्याकरणिक कोटियाँ तथा व्याकरण व्यवहार- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय का परिचय,पर्यायवाची शब्द,विलोम शब्द,अनेक शब्दों के लिए एक शब्द,मुहावरे, लोकोक्तियां, संक्षेपण और पल्लवन
- वाक्य परिचय- हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य, वाक्य भेद, वाक्य का रूपान्तर, वाक्यगत अशुद्धियाँ, विराम चिन्ह

अनुशंसित पुस्तकें:

1. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप- हरदेव बाहरी
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना- डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
3. संक्षिप्त हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वचनदेव कुमार
4. हिंदी व्याकरण - एन.सी.ई.आर.टी.
5. साहित्य सहचर- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

<u>द्वितीय समसत्र</u>

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **MAJOR**
Name of the Course: **आदि एवं मध्यकालीन काव्य-HIN011020 (credit 5)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview
साहित्य जनमानस की संचित चित वृत्तियों का कोश है। यह पाठ्यक्रम आदिकाल एवं मध्यकाल के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एवं परंपराओं को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया। आदिकालीन एवं मध्यकालीन कविता के अलावा हिंदी साहित्य के विकास, काल विभाजन एवं हिंदी साहित्य के प्रारंभिक स्वरूप से परिचित करवाना पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective
इस पाठ्यक्रम में हम हिन्दी साहित्य के आदिकाल एवं मध्यकाल के नामकरण, सीमा-निर्धारण एवं इसके आधारों को समझते हुए ऐतिहासिक घटनाओं का समाज पर पड़ रहे प्रभावों से अवगत हो सकेंगे। साहित्य देश-काल की परिस्थितियों से प्रभाव ग्रहण करता है और परिस्थितियों को प्रभावित भी करता है। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित आदिकालीन एवं मध्यकालीन साहित्य के स्वरूप, प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं को समझते हुए आदिकाल एवं मध्यकाल (भक्ति और रीति) के प्रमुख कवियों के चयनित रचनाओं को पढ़ते हुए भारतीय जनमानस को समझ सकेंगे। भक्ति साहित्य दो धाराओं सगुण एवं निर्गुण एवं दोनों की दो-दो उप-शाखाओं में विभक्त है। इस विभाजन के आधार, परस्पर भिन्नता और ऐक्य एवं सभी शाखाओं की विशेषताओं को समझते हुए कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास एवं जायसी के साहित्य संसार का अध्ययन-अनुशीलन करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि क्यों भक्ति युग हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग की संज्ञा से विभूषित है ?

Course features and learning outcome
Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:
1. हिंदी भाषा एवं साहित्य के उद्भव एवं विकास से अवगत होंगे।

2. हिंदी साहित्य के आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रवृत्तियों परिस्थितियों से परिचित होंगे।
3. आदिकालीन एवं मध्यकालीन दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित होंगे।
4. आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थियों को समझते हुए भारतीय जनमानस पर इसके प्रभाव को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

आदि एवं मध्यकालीन काव्य HIN011020 - MAJOR (5)

इकाई – 1

- अमीर खुसरो का हिंदी काव्य :
  - दोहे-गोरी सोवे सेज पर, खुसरो रैन सुहाग की, खुसरो दरिया प्रेम का
  - पहेलियां – इधर को आवे उधर को जावे, फारसी बोली आईना
  - दो सुखने-रोटी जली क्यों, समोसा क्यों न खाया
  - मुकरियां- बन ठन कर सिंगार करे, आँख चलावे मुंह मटकावे

- विद्यापति की पदावली : सं. रामवृक्ष बेनीपुरी, पद: 1,27,176,200,250,252,263 (कुल 7)

इकाई – 2

- कबीर ग्रंथावली : (सं.) श्याम सुन्दर दास
  गुरुदेव कौ अंग : 3, 4, 11, 15, 20, 21
  माया कौ अंग : 4, 7, 11, 28
  काल कौ अंग :1, 4, 11, 14
  विरह कौ अंग : 3, 6, 18, 21
  मन कौ अंग : 2, 3, 7, 12, 21

कथनी- करनी : 4

इकाई – 3

- सूरदास-सूर पंचरत्न: (सं.) स्व. लाला भगवानदीन, पं. मोहनलाल वल्लभ

  पहला रत्न- 5,6,10

  दूसरा रत्न – 9,36,49

  तीसरा रत्न – 1,10,12

  चौथा रत्न – 5,12,13

इकाई 4:-

- तुलसीदास – रामचरितमानस-सुंदरकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1 से 25 छंद

इकाई 5:-

- भूषण: भूषण ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र, तृतीय आवृत्ति संवद 2026, छंद संख्या 48, 56, 65, 75, 81
- पद्माकर: पद्माकर ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र: 122,389,397, 460, 499,
- ठाकुर: ठाकुर ठसक, लाला भगवानदीन, पद 12, 13, 33, 125,

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह
2. अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य – गोपीचंद नारंग
3. अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य – भोलानाथ तिवारी
4. कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. कबीर – (सं.) विजयेन्द्र स्नातक
6. कबीर के आलोचक – डॉ. धर्मवीर
7. मध्यकालीन प्रेमाख्यान – श्याम मनोहर पांडेय
8. मध्ययुगीन रोमांचक आख्यान – नित्यांनद तिवारी
9. सूर और उनका साहित्य – हरवंशलाल शर्मा
10. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पांडेय
11. सूरदास – हजारीप्रसाद द्विवेदी
12. गोस्वामी तुलसी दास – रामचंद्र शुक्ल
13. लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी
14. तुलसी-(सं.) उदयभानु सिंह
15. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र
16. भूषण ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र
17. पद्माकर ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र
18. ठाकुर ठसक, लाला भगवानदीन

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **MINOR**
Name of the Course: **हिन्दी काव्य-एक HIN021020 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

किसी देश समाज के साहित्य को जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी समाज को जानने के क्रम में उसके साहित्य से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिन्दी साहित्य के विकास प्रक्रिया को समझने तथा आधुनिक हिन्दी काव्य, काव्यगत प्रगतियों शिल्पगत विशेषताओं को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। उस कालखंड के समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचित कराना इसका लक्ष्य है । विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective

हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आधुनिक हिन्दी कविता, काव्यगत प्रवृत्तियों, शिल्पगत विशेषताओं से परिचित होना है । आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न पड़ावों तथा काव्य आंदोलनों से अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का मुख्य लक्ष्य होगा ।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिन्दी कविता के विकास प्रक्रिया को समझ सकेगें ।
2. आधुनिक हिन्दी कविता और काव्यगत प्रवृत्तियों तथा शिल्पगत विशेषताओं से अवगत होंगे ।
3. तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचय हो सकेगा ।
4. आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न पड़ावों तथा काव्य आंदोलनों को समझ सकेगें ।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी काव्य-एक HIN021020 - MINOR (4)

इकाई 1:- कबीर ग्रंथावली : (सं.) श्याम सुन्दर दास

- गुरुदेव कौ अंग : 3, 11, 15
- माया कौ अंग : 4, 11, 13, 28
- मन कौ अंग : 2, 7, 10, 25
- कथनी बिना करणी कौ अंग : 4
- निंद्या कौ अंग : 2, 3
- कस्तूरियाँ मृग कौ अंग : 1
- साध कौ अंग : 1
- साँच कौ अंग : 17
- संगति कौ अंग : 7
- मधि कौ अंग : 10

इकाई 2:- सूरदास – सूर पंचरत्न (संकलन लाला भगवानदीन , पं. मोहनवल्लभ पंत), रामनारायण लाल प्रकाशन, इलाहाबाद

- दूसरा रत्न छंद संख्या- 9, 22, 31, 39, 48, 49, 67, 77

इकाई 3:-

- तुलसीदास – रामचरितमानस-सुंदरकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1 से 10 छंद

इकाई 4:-

- रहीम - रहीम ग्रंथावली संपादक : विद्यानिवास मिश्र
  दोहवली छंद संख्या - 38, 49, 87, 126, 130, 166, 167
- भूषण: भूषण ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र, तृतीय आवृत्ति संवद 2026, छंद संख्या 48, 56, 65, 75, 81

अनुशंसित पुस्तकें:

1. कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. कबीर – (सं.) विजयेन्द्र स्नातक
3. कबीर के आलोचक – डॉ. धर्मवीर
4. गोस्वामी तुलसी दास – रामचंद्र शुक्ल
5. लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी
6. तुलसी-(सं.) उदयभानु सिंह
7. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र
8. भूषण ग्रंथावली: सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र
9. रहीम ग्रंथावली - संपादक : विद्यानिवास मिश्र
10. सूर पंचरत्न (संकलन लाला भगवानदीन , पं. मोहनवल्लभ पंत)

Course Structure/Syllabi

क्रेडिट 2

Type of Course: CC-1 (MIL)
Name of the Course: **हिन्दी व्याकरण- HIN041020** (क्रेडिट 2)
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है । जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का आधार भी है । किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, व्याकरणिक संरचना, वाक्य निर्माण का बोध कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है । विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है ।

Programme/course objective

भाषा और व्याकरण का बहुत गहरा संबंध है। भाषा प्रवाहमयी होता है और व्याकरण इस प्रवाह को नियंत्रित करने का काम करता है। इस पत्र को विद्यार्थियों में सामान्य हिन्दी व्याकरण से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया

गया है। मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति, भाषा संबंधी कौशल का विकास, उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान विकसित करना पत्र का लक्ष्य होगा। शब्दों के व्याकरण कोटियों तथा व्याकरण व्यवहार से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पत्र का मुख्य लक्ष्य होगा।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving.

Following learning outcome is expected after completion of course:

6. भाषा तथा व्याकरण के अंर्तसंबंध को समझ सकेगें।
7. भाषा के शुद्ध उच्चारण, सामान्य लेखन, रचनात्मक लेखन तथा तकनीकी शब्दों से अवगत होंगे।
8. शब्दों के व्याकरण कोटियों तथा व्याकरण व्यवहार – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से परिचित हो सकेगें।
9. वाक्य रचना, वाक्य भेद, वाक्य रूपांतरण, वाक्यगत अशुद्धियाँ को समझ सकेंगे।
10. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requisite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिंदी व्याकरण HIN041020 - CC 1 (MIL) (2)

इकाई 1:-

- व्याकरण की परिभाषा, महत्व, भाषा और व्याकरण का अंतःसंबंध ,ध्वनि, वर्ण और मात्राएं
- शब्दों के भेद एवं शब्द निर्माण - तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द,उपसर्ग,प्रत्यय ,संधि और समास

इकाई 2:-

- शब्दों की व्याकरणिक कोटियाँ तथा व्याकरण व्यवहार- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं अव्यय का परिचय,पर्यायवाची शब्द,विलोम शब्द,अनेक शब्दों के लिए एक शब्द,मुहावरे, लोकोक्तियां, संक्षेपण और पल्लवन
- वाक्य परिचय- हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य, वाक्य भेद, वाक्य का रूपान्तर, वाक्यगत अशुद्धियाँ, विराम चिन्ह

अनुशंसित पुस्तकें:

6. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप- हरदेव बाहरी
7. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना- डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद
8. संक्षिप्त हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वचनदेव कुमार
9. हिंदी व्याकरण - एन.सी.ई.आर.टी.
10. साहित्य सहचर- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

तृतीय समसत्र

Course structure/syllabi

Type of course: MAJOR
Name of the course: आधुनिक कविता-एक HIN012010 (क्रेडिट 4)
Floated by/proposed by: हिन्दी विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

पिछले पत्रों में हिन्दी कविता के तीन आरम्भिक पड़ावों आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के साहित्य संसार से विद्यार्थियों का परिचय हो चुका है। रीतिकाल के पश्चात् का पड़ाव आधुनिक काल है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक कविता की पीठिका तथा आधुनिक कविता लेखन के प्रारंभिक पड़ाव भारतेन्दु युग से छायावाद तक के युगप्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन विभिन्न सामाजिक राजनैतिक धार्मिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे साथ ही इन सबके प्रभाव से परिवर्तित उपजीव्य एवं विविध काव्यरूपों को समझ सकेंगे। यातायात, संचार, छापाखाना एवं अन्य तकनीकों के विकास से अभिव्यक्ति की शैली में आए परिवर्तन एवं साहित्य में उसके प्रभाव तथा समाज की प्रगति में काव्य के सहयोग को समझाना इस पत्र का प्रधान उद्देश्य है।

Programme/course objective

साहित्य का सीधा संबंध जीवन और संवेदना से होता है। विषय के रूप मे इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में न् केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों को समझते हुए आधुनिक कविता लेखन के प्रारम्भिक पड़ाव भारतेन्दु युग से छायावाद तक की हिन्दी कविता, काव्यगत प्रवृत्तियों, शिल्पगत विशेषताओं से परिचित करवाना है।

Course features and learning outcome

Classroom teaching, audio video lecture using ICT, online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course

1. हिन्दी कविता के विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. आधुनिक हिन्दी कविता और काव्यगत प्रवृत्तियों तथा शिल्पगत विशेषताओं से अवगत होंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचय हो सकेगा।
4. आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न पड़ावों तथा काव्य आंदोलनों को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from science, social science and humanities background. CUJ students of 1st -3rd semester can attend the course

Course eligibility/pre-requisite

Foundation or introductory course (level 200)

Course duration

One semester

Course structure

आधुनिक कविता-एक HIN012010– MAJOR (4)

इकाई 1:-

- मैथिलीशरण गुप्त – यशोधरा (महाभिनिष्क्रमण)

इकाई 2:-

- जयशंकर प्रसाद – उठ उठ री लघु-लघु लोल लहर, बीती विभावरी जाग री, प्रलय की छाया,

इकाई 3:-

- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला – वह तोड़ती पत्थर, स्नेह निर्झर बह गया है,

इकाई 4:-

- सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि, मौन निमंत्रण,
- महादेवी वर्मा –जागो तुझको दूर जाना, यह मंदिर का दीप,

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरुप चतुर्वेदी
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
5. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. नामवर सिंह
6. छायावाद – डॉ. नामवर सिंह
7. आधुनिक कविता यात्रा – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. आधुनिक कवि – विश्वम्भर 'मानव' , रामकिशोर शर्मा
9. पल्लव – सुमित्रानंदन पंत
10. दिनकर का प्रबंध शिल्प – डॉ. नवीन कुमार
11. राग विराग – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

Course structure/syllabi

Type of course: MAJOR

Name of the course: कथा साहित्य-HIN012030 (क्रेडिट 4)

Floated by/proposed by: हिन्दी विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

पुरातन वाचिक परम्परा कथा-कहानियों एवं गीत-भजनों से ओतप्रोत है परन्तु हिन्दी साहित्य में कथा लेखन का आरम्भ मुख्यतः आधुनिक काल में हुआ। इस पत्र में हिन्दी कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास के विभिन्न चरणों को समझते हुए युगप्रतिनिधि रचनाकारों की प्रसिद्ध चयनित रचनाओं से विद्यार्थियों का परिचय होगा। रचना का उपजीव्य समाज होता है इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस पत्र में शामिल विविध कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने समाज एवं उसके परिवर्तनशील परिदृश्य को समझाना तथा उन्हें यथावश्यक सहृद, सुहृद एवं संवेदनशील बनाना ही उद्देश्य है।

Programme/course objective

विषय के रूप मे इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में न् केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पत्र के माध्यम से आधुनिक गद्य साहित्य के विकास को समझते हुए हिन्दी कथा साहित्य के विकास प्रक्रिया को समझने का प्रयास रहेगा। कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास के विभिन्न चरणों को समझते हुए प्रतिनिधि चयनित रचनाओं से विद्यार्थियों का परिचय होगा। कथा साहित्य, उसके शिल्पगत विशेषताओं को समझते हुए तत्कालीन सामाजिक यथार्थ को जानना पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Classroom teaching, audio video lecture using ICT, online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course

1. गद्य साहित्य के विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. हिन्दी कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास को समझ सकेंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचय हो सकेगा।
4. हिन्दी कथा साहित्य के विभिन्न पड़ावों तथा शिल्पगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from science, social science and humanities background. CUJ students of 1st -3rd semester can attend the course

Course eligibility/pre-requisite

Foundation or introductory course (level 200)

Course duration

One semester

Course structure

कथा साहित्य HIN012030 – MAJOR(4)

उपन्यास

इकाई 1:- गोदान(उपन्यास) – प्रेमचंद

कहानियाँ

इकाई 2:-

- उसने कहा था – चंद्रधर शर्मा गुलेरी
- पूस की रात – प्रेमचंद
- पुरस्कार – जयशंकर प्रसाद

इकाई 3:-

- नीलम देश की राजकन्या – जैनेन्द्र
- वापसी – उषा प्रियंवदा
- लाल पान की बेगम – फनीश्वरनाथ रेणु

इकाई 4:-

- चीफ की दावत – भीष्म साहनी
- पगडंडियों का जमाना – हरिशंकर परसाई

अनुशासित पुस्तकें

1. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ मधुरेश
2. हिन्दी कहानी का इतिहास - डॉ गोपाल रॉय
3. हिन्दी कहानी के सौ वर्ष - डॉ दीनानाथ सिंह
4. कहानी नयी कहानी - नामवर सिंह
5. हिन्दी कहानी: अंतरंग पहचान – रामदरश मिश्र
6. हिन्दी उपन्यास: एक अंतरयात्रा – रामदरक्ष मिश्र
7. गोदान का महत्व – डॉ सत्यप्रकाश मिश्र
8. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा
9. प्रेमचंद – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
10. हिन्दी उपन्यास का विकास – डॉ गोपाल रॉय
11. नयी कहानी – कमलेश्वर
12. एक दुनियाँ समानांतर – राजेन्द्र यादव

Course structure/syllabi

Type of course: MINOR
Name of the course: हिन्दी कथा संसार- HIN022010 (क्रेडिट 4)
Floated by/proposed by: हिन्दी विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

पुरातन वाचिक परम्परा कथा-कहानियों एवं गीत-भजनों से ओतप्रोत है परन्तु हिन्दी साहित्य में कथा लेखन का आरम्भ मुख्यतः आधुनिक काल में हुआ। इस पत्र में हिन्दी कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास के विभिन्न चरणों को समझते हुए युगप्रतिनिधि रचनाकारों की प्रसिद्ध चयनित रचनाओं से विद्यार्थियों का परिचय होगा। रचना का उपजीव्य समाज होता है इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस पत्र में शामिल विविध कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने समाज एवं उसके परिवर्तनशील परिदृश्य को समझाना तथा उन्हें यथावश्यक सहृद, सुहृद एवं संवेदनशील बनाना ही उद्देश्य है।

Programme/course objective

विषय के रूप मे इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में न् केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पत्र के माध्यम से आधुनिक गद्य साहित्य के विकास को समझते हुए हिन्दी कथा साहित्य के विकास प्रक्रिया को समझने का प्रयास रहेगा। कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास के विभिन्न चरणों को समझते हुए प्रतिनिधि चयनित रचनाओं से विद्यार्थियों का परिचय होगा। कथा साहित्य, उसके शिल्पगत विशेषताओं को समझते हुए तत्कालीन सामाजिक यथार्थ को जानना पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Classroom teaching, audio video lecture using ICT, online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course

1. गद्य साहित्य के विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. हिन्दी कथा साहित्य के उद्भव एवं विकास को समझ सकेंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचय हो सकेगा।
4. हिन्दी कथा साहित्य के विभिन्न पड़ावों तथा शिल्पगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from science, social science and humanities background. CUJ students of 1st -3rd semester can attend the course

Course eligibility/pre-requisite

Foundation or introductory course (level 200)

Course duration

One semester

Course structure

हिन्दी कथा संसार -HIN022010 -MINOR (4)

इकाई 1:-

- आपका बंटी (उपन्यास)- मन्नू भण्डारी

कहानियाँ

इकाई 2:-

- उसने कहा था- चंद्रधर शर्मा गुलेरी
- नामक का दरोगा – प्रेमचंद

इकाई 3:-

- पंचलाइट – फनीश्वरनाथ रेणु
- ताई- विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक

इकाई 4:-

- दोपहर का भोजन – अमरकांत
- भोलाराम का जीव – हरिशंकर परसाई

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिन्दी कहानी का विकास - डॉ मधुरेश
2. हिन्दी कहानी का इतिहास - डॉ गोपाल रॉय
3. हिन्दी कहानी के सौ वर्ष - डॉ दीनानाथ सिंह
4. कहानी नयी कहानी - नामवर सिंह
5. हिन्दी कहानी: अंतरंग पहचान – रामदरश मिश्र
6. हिन्दी उपन्यास: एक अंतरयात्रा – रामदरक्ष मिश्र
7. हिन्दी उपन्यास का विकास – डॉ गोपाल रॉय
8. नयी कहानी – कमलेश्वर
9. एक दुनियाँ समानांतर – राजेन्द्र यादव

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **CC-1 (MIL)**
Name of the Course: **संप्रेषण कला HIN041030 (क्रेडिट 2)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है। जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का आधार भी है। किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है।

अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, व्याकरणिक संरचना, वाक्य निर्माण का बोध कराने, सम्प्रेषण कौशल का विकास करने एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित करवाने के उद्देश्य से तैयार किया गया। हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective

हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं से परिचित करवाना एवं विद्यार्थी की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना, मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति का विकास करना, स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर के विशिष्ट साहित्य से परिचित कराना, भाषा संबंधी कौशल का विकास, उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिंदी भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष से अवगत होंगे।
2. सम्प्रेषण कला के सैद्धांतिकी से परिचित होंगे।
3. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होगी ताकि वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।
4. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

10+2 or Equivalent

Course duration

One Semester

Course structure

संप्रेषण कला HIN041030 - CC-1 (MIL)

इकाई 1:-

- भाषिक सम्प्रेषण: स्वरूप एवं सिद्धांत- संप्रेषण की अवधारणा, संप्रेषण के प्रकार, संप्रेषण के माध्यम
- सम्प्रेषण के प्रकार- मौखिक एवं लिखित, वैयक्तिक और सामाजिक, व्यावसायिक, भ्रामक सम्प्रेषण, सम्प्रेषण बाधाएँ और रणनीति

इकाई 2:-

- सम्प्रेषण के माध्यम- एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा, प्रभावी सम्प्रेषण, साक्षात्कार, भाषण कला एवं रचनात्मक लेखन, जन संचार माध्यमों पर सम्प्रेषण
- भाषा सम्प्रेषण के चरण: श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन,प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका

सहायक ग्रंथ

- सम्प्रेषण- परक व्याकरण: सिद्धान्त और स्वरूप- सुरेश कुमार

चतुर्थ समसत्र

Course Structure/Syllabi

Type of Course: Major
Name of the Course: आधुनिक कविता- दो **HIN011040 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

आधुनिक कविता लेखन के प्रारंभिक पड़ाव भारतेन्दु युग से छायावाद तक के कवियों को हमने पिछले पत्र 'आधुनिक कविता-एक' में समझा। 'आधुनिक कविता-दो' पत्र में हम छायावाद के बाद के युगप्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन विभिन्न सामाजिक राजनैतिक धार्मिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे साथ ही इन सबके प्रभाव से परिवर्तित उपजीव्य एवं विविध काव्यरूपों को समझ सकेंगे। यातायात, संचार, छापाखाना एवं अन्य तकनीकों के उत्तरोत्तर विकास से अभिव्यक्ति की शैली में आए परिवर्तन एवं साहित्य में उसके प्रभाव तथा समाज की प्रगति में काव्य के सहयोग को समझाना इस पत्र का प्रधान उद्देश्य है।

Programme/course objective

साहित्य का सीधा संबंध जीवन और संवेदना से होता है। विषय के रूप मे इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में न् केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों को समझते हुए आधुनिक कविता लेखन के महत्वपूर्ण पड़ाव छायावाद के बाद की हिन्दी कविता, काव्यगत प्रवृत्तियों, शिल्पगत विशेषताओं से परिचित करवाना है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिन्दी कविता के विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. छायावाद के बाद हिन्दी कविता और काव्यगत प्रवृत्तियों तथा शिल्पगत विशेषताओं से अवगत होंगे।
3. तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों से परिचय हो सकेगा।
4. आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न पड़ावों तथा काव्य आंदोलनों को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.
Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

आधुनिक कविता- दो **- HIN011040(4)**

इकाई 1

- रामधारी सिंह दिनकर- परशुराम की प्रतीक्षा

इकाई 2

- अज्ञेय- कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, सांप
- नागार्जुन – बहुत दिनों के बाद , अकाल और उसके बाद , सिंदूर तिलकित भाल , गुलाबी चूड़ियाँ

इकाई 3

- भवानी प्रसाद मिश्र – सतपुड़ा के घने जंगल, घर की याद, गीत-फ़रोश
- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – कुआनो नदी

इकाई 4

- केदारनाथ सिंह - सुई और तागे के बीच में, पानी की प्रार्थना, एक लोकगीत की अनु-कृति
- धूमिल – शहर का व्याकरण , मोचीराम, आज मैं लड़ रहा हूँ

अनुशंसित पुस्तकें

1. कविता के नए प्रतिमान- नामवर सिंह
2. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह
3. कविता से साक्षात्कार- मलयज
4. लंबी कविताओं का रचना विधान- नरेंद्र मोहन
5. अज्ञेय और आधुनिक रचना की स्थापना- रामस्वरुप चतुर्वेदी
6. अज्ञेय वागर्थ का वैभव- रमेशचंद्र शाह
7. नागार्जुन का रचना संसार- विजय बहादुर सिंह
8. नागार्जुन – अजय तिवारी
9. धूमिल की श्रेष्ठ कविताएं – ब्रह्मदेव मिश्र
10. प्रतिनिधि कविताएं – केदारनाथ सिंह (राजकमल प्रकाशन)
11. प्रतिनिधि कविताएं - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (राजकमल प्रकाशन)

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: प्रयोजनमूलक हिन्दी **HIN011060 (credit 5)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

हिन्दी भाषा भारत की राजभाषा है। हिन्दी भाषा का प्रयोग कार्यालय के काम काज के प्रयोजन के लिए किया जाता है। प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य उस भाषा के स्वरूप से है जो विज्ञान, तकनीकी,विधि,संचार एवं अन्य गतिविधियों में प्रयुक्त होती है। यह पाठ्यक्रम प्रयोजनमूलक हिन्दी को समझने एवं आगत भविष्य में उसके महत्व को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। विषय के रूप में इसे स्नातक के अध्ययन के पाठ्यक्रम में न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि कार्यालयी भाषा के प्रयोग एवं हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों को रोजगारपरक बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

Programme/course objective

इस पाठ्यक्रम में हम प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा और प्रासंगिकता को समझने का प्रयास करेंगे। प्रयोजनमूलक हिन्दी का कार्यालयों में प्रयोग और समस्याओं और उसके समाधान को समझना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य होगा। हिन्दी भाषा की सवैधानिक स्थिति, राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर को समझने का प्रयास इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य होगा। प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी एक ही भाषा के दो अलग-अलग रूप हैं,परंतु उनकी शब्दावली,वाक्य संरचना आदि भिन्न भिन्न होती है। इस पाठ्यक्रम से हम प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी के अंतर को समझने का प्रयास करेंगे।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. प्रयोजन मूलक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अंतर समझ सकेंगे।
2. **प्रयोजन मूलक हिन्दी की अवधारणा एवं दिशाएं , प्रासंगिकता को जान सकेंगे**
3. **हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे**
4. **राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा , प्रशासनिक हिन्दी , टिप्पण, प्रारूपण , संक्षेपण , पल्लवन आदि समझ सकेंगे**

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

प्रयोजन मूलक हिन्दी **- HIN011060 - MAJOR(5)**

इकाई 1:-

- **प्रयोजन मूलक हिन्दी की अवधारणा एवं दिशाएं , प्रासंगिकता**
- **प्रयोजन मूलक हिन्दी और भाषा प्रयुक्ति, प्रयोजन मूलक हिन्दी की समस्याएं एवं समाधान ,प्रयोजन मूलक हिन्दी के उद्देश्य**

इकाई 2

- **हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा**
- **प्रयोजन मूलक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अंतर**
- **राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा**

इकाई 3

- **पारिभाषिक शब्दावली की समस्या एवं समाधान**
- **कार्यालयी हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली**
- **पदनाम तथा अनिभाग के नाम**
- **औपचारिक पदावलियाँ/ अभिव्यक्तियाँ**

इकाई 4

- कार्यालयी पत्राचार के विविध प्रकार – सामान्य परिचय
- कार्यालय से निगत पत्र (ज्ञापन, परिपत्र, अनुस्मारक, सूचनाएं, आदेश, निविदा आदि)
- रिक्त पदों पर भर्ती हेतु विज्ञापन
- आवेदन लेखन

इकाई 5

- टिप्पण का स्वरूप, विशेषताएं और भाषा शैली
- प्रारूपण के प्रकार, भाषा शैली, प्रारूपण की विधि
- संक्षेपण के प्रकार, विशेषताएं और संक्षेपण की विधि

अनुशंसित पुस्तकें

1. राजभाषा हिन्दी- कैलाश चंद्र भाटिया
2. प्रशासनिक हिन्दी- महेशचंद्र गुप्त
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी- दंगल झाल्टे
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. नरेश मिश्र
5. प्रयोजनमूलक हिन्दी- डॉ. विनोद गोदरे

6. प्रयोजनमूलक हिन्दी और काव्यांग - डॉ. नरेश मिश्र
7. भारतीय सरकार की राजभाषा नीति – डॉ. अरविन्द कुलश्रेष्ठ
8. हिन्दी संक्षेपण, पल्लवन और पाठबोधन- डॉ. हरदेव बाहरी

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: **निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं HIN011080 (credit 5)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

आधुनिक हिन्दी साहित्य की विविध गद्य विधाओं का पाठ आधारित परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है। इस पाठ्यक्रम के बाल पर विद्यार्थी हिन्दी की गद्य विधाओं के प्रवृत्तिपरक परिचय के साथ-साथ उनके शिल्प विधि का भी पाठाधारित ज्ञान प्राप्त कर लेता है। गद्य विधाओं के दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आधारों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी में इन गद्य विधाओं की समीक्षा करने की योग्यता को विकसित करना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का आशय है।

Programme/course objective

आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं का आरंभ होता है। ये विधाएं गद्य के विभिन्न रूपों से हमें परिचित करती हैं और हमारे साहित्यिक अनुभव का विस्तार करती है। इस पत्र से विद्यार्थी निबंध तथा विविध गद्य रूपों के स्वरूप, विकास एवं दृष्टियों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। विविध गद्य रूपों के अध्ययन से साहित्यिक विकास की वृहत्तर संस्कृति से जोड़ना हीं इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. आधुनिक हिन्दी गद्य के सौन्दर्य का आस्वादन कर सकेंगे।
2. नए आदर्शों, मूल्यों और विमर्शों से परिचित होकर जीवन की समझ बनाने में समर्थ हो सकेंगे।
3. नए युग के प्रश्नों से सहानुभूति रखकर जीवन में मानवीय संवेदना का विस्तार कर सकेंगे।
4. युग के अनुरूप नई भाषा के सुसंस्कृत प्रयोग का बोध प्राप्त कर सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं **- HIN011080(5)**

इकाई 1

- बालकृष्ण भट्ट – साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है
- महावीर प्रसाद द्विवेदी – कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता

इकाई 2

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल – श्रद्धा और भक्ति
- विद्यानिवास मिश्र – मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

इकाई 3

- संस्मरण : पथ के साथी – महादेवी वर्मा

इकाई 4

- आत्मकथा: अपनी खबर- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

इकाई 5

- यात्रा वृतांत: अरे यायावर रहेगा याद

अनुशंसित पुस्तकें

1. निबंध निलय- डॉ. सत्येन्द्र
2. आत्मकथा की संस्कृति- पंकज चतुर्वेदी
3. आत्मकथा और उपन्यास- ज्ञानेन्द्र संतोष
4. हिन्दी गद्य का विकास- डॉ. रामचन्द्र तिवारी
5. महियसी महादेवी- गंगा प्रसाद पाण्डेय
6. हिन्दी गद्य शैली का विकास- जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
7. हिन्दी के वैयक्तिक निबंधकार- श्रीलाल शुक्ल
8. हिन्दी निबनधकार- जयनाथ नलिन
9. समसामयिक हिन्दी निबंध- ज्ञानेन्द्र वर्मा

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **minor**
Name of the Course: **हिन्दी कविता-दो HIN021040 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

आधुनिक कविता लेखन के प्रारंभिक पड़ाव भारतेन्दु युग से छायावाद तक के कवियों को हमने पिछले पत्र 'आधुनिक कविता-एक' में समझा। 'आधुनिक कविता-दो' पत्र में हम छायावाद के बाद के युगप्रतिनिधि कवियों की चुनी हुई रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन विभिन्न सामाजिक राजनैतिक धार्मिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे साथ ही इन सबके प्रभाव से परिवर्तित उपजीव्य एवं विविध काव्यरूपों को समझ सकेंगे। यातायात, संचार, छापाखाना एवं अन्य तकनीकों के उत्तरोत्तर विकास से अभिव्यक्ति की शैली में आए परिवर्तन एवं साहित्य में उसके प्रभाव तथा समाज की प्रगति में काव्य के सहयोग को समझाना इस पत्र का प्रधान उद्देश्य है।

Programme/course objective

साहित्य का सीधा संबंध जीवन और संवेदना से होता है। विषय के रूप मे इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में न् केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों को समझते हुए आधुनिक कविता लेखन के महत्वपूर्ण पड़ाव छायावाद के बाद की हिन्दी कविता, काव्यगत प्रवृत्तियों, शिल्पगत विशेषताओं से परिचित करवाना है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी कविता-दो **- HIN021040 minor (4)**

इकाई 1 :

- मैथिलीशरण गुप्त - नर हो न निराश करो मन को, देखी मैंने आज जय
- जयशंकर प्रसाद – अशोक की चिंता, हिमालय के आँगन में
- महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ

इकाई 2 :

- रामधारी सिंह दिनकर - रश्मिरथी -तृतीय सर्ग (कृष्ण की चेतावनी)
- **माखनलाल चतुर्वेदी – पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला**

इकाई 3 :

- शिवमंगल सिंह 'सुमन' – वरदान माँगूँगा नहीं, चलना हमारा काम है
- केदारनाथ अग्रवाल – बसंती हवा, वह चिड़ियाँ जो

इकाई 4 :

- हरिवंश राय बच्चन - नीड़ का निर्माण, जो बीत गई सो बात गई, आज मुझसे बोल बादल
- भगवती चरण वर्मा - हम दीवानों की क्या हस्ती
- गोपाल सिंह नेपाली - हिन्दी है भारत की बोली

अनुशंसित पुस्तकें

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **CC-1 (MIL)**
Name of the Course: **संप्रेषण कला HIN041040 (क्रेडिट 2)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भाषा का प्रयोग जितना ही नैसर्गिक, सरल और उपयोगी है, इसको परिभाषित करना उतना ही कठिन है। भाषा मनुष्य की नैसर्गिक जैवीय क्षमता के साथ ही एक सांस्कृतिक विशेषता भी है। जो विभिन्न भाषाओं के मध्य अंतर का

आधार भी है। किसी देश समाज की भाषा जानना उस समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश को समझना भी है। अतः किसी भाषा को सीखने के क्रम में उसके विकास और व्याकरणिक संरचना से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। यह पाठ्यक्रम मूलतः हिंदी भाषा के विकास, व्याकरणिक संरचना, वाक्य निर्माण का बोध कराने, सम्प्रेषण कौशल का विकास करने एवं हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित करवाने के उद्देश्य से तैयार किया गया। हिंदी साहित्य और भाषा का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है।

Programme/course objective

हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन वैज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसका सीधा संबंध संवेदना और जीवन से है। विषय के रूप में इसे स्नातक अध्ययन के पाठ्यक्रम में आरंभ से ही न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि उसके विस्तार और नियोजन में विशेष रूप से मानव मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को सम्मिलित करने का प्रयास भी किया गया है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं से परिचित करवाना एवं विद्यार्थी की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना, मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति का विकास करना, स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर के विशिष्ट साहित्य से परिचित कराना, भाषा संबंधी कौशल का विकास, उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

5. हिंदी भाषा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष से अवगत होंगे।
6. सम्प्रेषण कला के सैद्धांतिकी से परिचित होंगे।
7. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होगी ताकि वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।
8. साहित्य, संस्कृति, चिंतन एवं अभिव्यक्ति में भाषा के प्रकार्य को समझ सकेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

10+2 or Equivalent

Course duration

One Semester

Course structure

<u>संप्रेषण कला</u> HIN041040 - CC-1 (MIL)

इकाई 1:-

- भाषिक सम्प्रेषण: स्वरूप एवं सिद्धांत- संप्रेषण की अवधारणा, संप्रेषण के प्रकार, संप्रेषण के माध्यम
- सम्प्रेषण के प्रकार- मौखिक एवं लिखित, वैयक्तिक और सामाजिक, व्यावसायिक, भ्रामक सम्प्रेषण, सम्प्रेषण बाधाएँ और रणनीति

इकाई 2:-

- सम्प्रेषण के माध्यम- एकालाप, संवाद, सामूहिक चर्चा, प्रभावी सम्प्रेषण, साक्षात्कार, भाषण कला एवं रचनात्मक लेखन, जन संचार माध्यमों पर सम्प्रेषण
- भाषा सम्प्रेषण के चरण: श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन,प्रभावी व्यक्तित्व के निर्माण में संप्रेषण की भूमिका

सहायक ग्रंथ

- सम्प्रेषण- परक व्याकरण: सिद्धान्त और स्वरूप- सुरेश कुमार

पँचम समसत्र

Course Structure/Syllabi

Type of Course: Major
Name of the Course: **हिन्दी साहित्य का इतिहास-एक HIN01107 (credit 5)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview
साहित्य समाज का दर्पण होता है। जैसे जैसे समाज की प्रकृति में बदलाव आते हैं, साहित्य भी अपना स्वरूप वैसे हीं विकसित करता है। साहित्य का इतिहास वह विधा है जो हमें मानवीय संवेदना के क्रमिक विकास से परिचित कराती है। पाठ्यक्रम के एक विषय के रूप में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-एक' को इसलिए सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की विकास प्रक्रिया को समझ सकें। विद्यार्थियों में युग चेतना और साहित्य चेतना की समझ विकसित करना इस पत्र का प्रयोजन है।
Programme/course objective
हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास प्रक्रिया को समझना इस पत्र का उद्देश्य है। साहित्य, इतिहास और साहित्येतिहास के अंतर को समझते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा और काल विभाजन तथा उनके नामकरण को समझना इस पत्र का मुख्य प्रयोजन है। आदिकाल और मध्यकाल के युग चेतना और साहित्य चेतन को समझते हुए तत्कालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा प्रमुख साहित्यकारों से परिचित करना इस पत्र का लक्ष्य है।
Course features and learning outcome
Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:
1. हिन्दी साहित्य की विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. इतिहास और साहित्येतिहास मे अन्यत्र स्पष्ट करते हुए काल विभाजन और नामकरण को जान सकेंगे।
3. आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों से अवगत होंगे।
4. युग चेतना से परिचित होते हुए उस युग की साहित्यिक चेतना से परिचित होंगे

Who can attend/course audience
This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.
Course eligibility/Pre-requisite
Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी साहित्य का इतिहास-एक - HIN01107 MAJOR(5)

इकाई 1:

- साहित्य, इतिहास, और साहित्येतिहास
- हिन्दी साहितयेतिहास लेखन की परंपरा
- हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्या
- हिन्दी साहित्य: काल विभाजन एवं नामकरण

इकाई 2:

- आदिकालीन परिस्थितियाँ और प्रवृत्तियाँ
- रासो ग्रंथ , सिद्ध नाथ और जैन साहित्य
- आदिकाल के प्रमुख कवियों का परिचय

इकाई 3:

- भक्ति आंदोलन के उदय के कारण
- भक्तिकाल की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ
- भक्ति काल की दार्शनिक पृष्ठभूमि

इकाई 4:

- निर्गुण भक्ति का स्वरूप और भेद
- प्रमुख निर्गुण भक्त कवियों का परिचय
- सगुण भक्ति का स्वरूप और भेद
- प्रमुख सगुण भक्त कवियों का परिचय

इकाई 5:

- रीतिकाल की परिस्थितियाँ और प्रवृतियाँ
- दरबारी संस्कृति और रीतिकाल
- रीतिकाल की विभिन्न काव्यधराएं
- रीतिकाल के प्रमुख कवियों का परिचय

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास- हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका- हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- गणपती चंद्र गुप्त
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
7. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास- रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास- विश्वनाथ त्रिपाठी
9. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएं- श्याम कश्यप
10. साहित्य और इतिहास दृष्टि- मैनेजर पांडेय

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: अनुवाद अध्ययन **HIN01108 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview
सम्पूर्ण विश्व बहुभाषी, बहुसंस्कृति के स्वरूप में है। किसी भी व्यक्ति द्वारा विश्व की सम्पूर्ण भाषाओं का ज्ञान होना मुश्किल है। अनुवाद के द्वारा हम विश्व की एक दूसरे की संस्कृति एवं व्यवहार को समझ सकते है। किसी भाषा में कही,लिखी गई बात को किसी दूसरी भाषा में परिवर्तन को अनुवाद कहा जाता है। यह पाठ्यक्रम अनुवाद के नियम,स्वरूप,प्रक्रिया,प्रविधि,उपकरण को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। भाषा एवं साहित्य अध्ययन को व्यावसायिक कैसे बनाया जाए ?विभिन्न भाषा के साहित्य को कैसे पढ़ा जाए? इन समस्याओं को केंद्र में रखते हुए स्नातक के अध्ययन में अनुवाद पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है।

Programme/course objective
यह पाठ्यक्रम "प्राप्तस्य पुनः कथते अथवा ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने" के उद्देश्य से तैयार किया गया है। यख़ पाठ्यक्रम अनुवाद के नियमों,अन्तः भाषिक अनुवाद,अंतर भाषिक अनुवाद,अनुवाद की प्रकृति को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। अनुवाद क्यों आवश्यक है? अनुवाद व्यावसायिक और व्यावहारिक कैसे हो? अनुवाद की कौन कौन सी प्रक्रियाएं है? अनुवाद करते समय हमें किन किन उपकरणों का प्रयोग करते है? अनुवाद के पश्चात पुनरीक्षण एवं सम्पादन का क्या योगदान है? यह समझना इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य होगा।

Course features and learning outcome
Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:
1. अनुवाद अध्ययन के महत्व को समझ सकेंगे।

2. अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप और इसकी सीमाएं जान सकेंगे।
3. अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि से अवगत होंगे।
4. अनुवाद की सार्थकता और प्रासंगिकता को समझ सकते हैं।
5. इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर खुलेंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

अनुवाद अध्ययन - **HIN01108 MAJOR(5)**

इकाई 1

- अनुवाद : परिभाषा , स्वरूप , और सीमाएं
- अनुवाद का संदर्भ- अन्तः भाषिक , अंतर भाषिक , अंतर प्रतीकात्मक
- अनुवाद की प्रकृति-कला , विज्ञान, शिल्प

इकाई 2

- अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि
- अनुवाद के उपकरण : कोश , पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस , कंप्युटर
- अनुवाद पुनरीक्षण ,सम्पादन ,मूल्यांकन

इकाई 3

- अनुवाद की सार्थकता , प्रासंगिकता , एवं व्यावसायिक परिदृश्य
- अनुवाद के गुण

इकाई 4

- अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी अवतरण का अंग्रेजी अनुवाद
- शब्दावली , कैप्शन और अभिव्यक्ति का अनुवाद

इकाई 5

- अनुवाद अभ्यास (अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी)

जनसंचार
प्रशासनिक अनुवाद
बैंकिंग अनुवाद
विधि अनुवाद

अनुशंसित पुस्तकें

1. अनुवाद: सिद्धांत और समस्याएं- डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी
2. हिन्दी अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग – वासुदेव नंदन प्रसाद
3. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा- सुरेश कुमार
4. अनुवाद विज्ञान- डॉ. नगेन्द्र

अनुवाद के सिद्धांत: समस्याएं और समाधान – रामचन्द्र रेड्डी

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: **भारतीय साहित्य HIN01111 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

Programme/course objective

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिंदी भाषा एवं साहित्य के उद्भव एवं विकास से अवगत होंगे।
2. हिंदी साहित्य के आदिकालीन एवं भक्तिकालीन प्रवृत्तियों परिस्थितियों से परिचित होंगे।
3. आदिकालीन एवं भक्तिकालीन दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित होंगे ।
4. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होगी ताकि वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

भारतीय साहित्य - **HIN01111(4)**

इकाई 1: भारतीय साहित्य की अवधारणा

- भारत की भौगोलिक, भाषिक और सांस्कृतिक विविधता
- विविधता में एकता का अंतःसूत्र : भाषा, संस्कृति और साहित्य का अंतःसंबंध
- भारतीय साहित्य की संकल्पना, भारतीय साहित्य के आधार तत्व
- भारतीय साहित्य का सामासिक स्वरूप

इकाई 2

- गीतांजलि-रवींद्रनाथ टैगोर : अभिसार, प्राण, मुक्ति त्राण, भारत तीर्थ, बंदी (अनुवाद एवं सम्पादन, हज़ारिप्रसाद द्विवेदी, साहित्य अकादमी)

इकाई 3

- गिरीश कर्नाड

इकाई 4

- शिवशंकर पिल्लई

अनुशंसित पुस्तकें

1. भारतीय साहित्य-डॉ नगेन्द्र
2. भारतीय साहित्य की भूमिका-रामविलास शर्मा
3. भारतीय साहित्य की अवधारणा- डॉ शीला मिश्र
4. भारतीय साहित्य की पहचान-सियारम तिवारी
5. आज का भारतीय साहित्य- साहित्य अकादमी

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **minor**

Name of the Course: **कथेतर गद्य HIN02105 (credit 4)**

Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

Programme/course objective

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

कथेतर गद्य-HIN02105-MINOR(4)

इकाई 1:-

- आचरण की सभ्यता – सरदार पूर्ण सिंह
- नाखून क्यों बढ़ते हैं – हज़ारिप्रसाद द्विवेदी

इकाई 2:-

- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है – विद्यानिवास मिश्र
- लोभ और प्रीति – रामचन्द्र शुक्ल

इकाई 3:-

- पथ के साथी (संस्मरण)- महादेवी वर्मा

इकाई 4:-

- यात्रा वृतांत : अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा- राहुल सांकृत्यायन

अनुशंसित पुस्तकें

1. निबंध निलय- डॉ. सत्येन्द्र

2. आत्मकथा की संस्कृति- पंकज चतुर्वेदी
3. आत्मकथा और उपन्यास- ज्ञानेन्द्र संतोष
4. हिन्दी गद्य का विकास- डॉ. रामचन्द्र तिवारी
5. महियसी महादेवी- गंगा प्रसाद पाण्डेय
6. हिन्दी गद्य शैली का विकास- जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
7. हिन्दी के वैयक्तिक निबंधकार- श्रीलाल शुक्ल
8. हिन्दी निबनधकार- जयनाथ नलिन
9. समसामयिक हिन्दी निबंध- ज्ञानेन्द्र वर्मा

षष्टम समसत्र

Course Structure/Syllabi

Type of Course: Major
Name of the Course: **हिन्दी साहित्य का इतिहास-दो HIN01110 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview
साहित्य समाज का दर्पण होता है। जैसे जैसे समाज की प्रकृति में बदलाव आते हैं, साहित्य भी अपना स्वरूप वैसे हीं विकसित करता है। साहित्य का इतिहास वह विधा है जो हमें मानवीय संवेदना के क्रमिक विकास से परिचित कराती है। पाठ्यक्रम के एक विषय के रूप में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दो' को इसलिए सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की विकास प्रक्रिया को समझ सकें। विद्यार्थियों में युग चेतना और साहित्य चेतना की समझ विकसित करना इस पत्र का प्रयोजन है। इस पत्र मे आधुनिक काल की साहित्यिक प्रवृत्तियों को समझते हुए नवजागरण की पृष्ठभूमि समझ सकेंगे। आधुनिक काल विभिन्न विधाओं के प्रादुर्भाव का काल था। विभिन्न गद्य विधाओं के तत्वों को समझना इस पत्र का लक्ष्य होगा।

Programme/course objective
'हिन्दी साहित्य का इतिहास-एक' मे हम आदिकाल और मध्यकाल के साहित्यिक इतिहास को पढ़ चुके हैं। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास-दो' पत्र का उद्देश्य आधुनिक काल के साहित्येतिहास को समझना है। नवजागरण तथा भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में उसकी महत्ता को समझते हुए आधुनिक काल की विभिन्न काव्यधारों, प्रवृत्तियाँ तथा पृष्ठभूमि अवगत कराना इस पत्र का लक्ष्य है। आधुनिक काल के युग चेतना और साहित्य चेतना को समझते हुए विभिन्न विधाओं यथा- कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध और अन्य गद्य विधाओं के उद्भव और विकास को समझना तथा तत्कालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा प्रमुख साहित्यकारों से परिचित करना इस पत्र का मुख्य प्रयोजन है।

Course features and learning outcome
Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:
1. हिन्दी साहित्य की विकास प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. नवजागरण तथा स्वाधीनता आंदोलन में उसकी भूमिका समझ सकेंगे।
3. आधुनिककालीन काव्य प्रवृत्तियों तथा उसकी पृष्ठभूमि से अवगत होंगे।
4. गद्य साहित्य के आविर्भाव तथा विभिन्न गद्य विधाओं से परिचित होंगे।
5. आधुनिक युगीन चेतना से परिचित होते हुए उस युग की साहित्यिक चेतना से परिचित होंगे।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी साहित्य का इतिहास -दो - HIN01110-MAJOR(4)

इकाई 1

- आधुनिक काल: परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ और गद्य का विकास
- हिन्दी नवजागरण: भारतेन्दु और आचार्य द्विवेदी की भूमिका
- भारतेन्दु युगीन कविताओं का विषय संदर्भ और विशेषताएं
- द्विवेदी युगीन कविताओं का विषयबोध और खड़ी बोली का निर्माण
- राष्ट्रवादी और स्वच्छंदतावादी काव्यधराएं

इकाई दो

- छायावाद : परिस्थियाँ, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं
- प्रगतिवाद: परिस्थियाँ, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं
- प्रयोगवाद : परिस्थियाँ, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं

इकाई 3

- नई कविता : परिस्थियाँ, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं
- समकालीन कविता: परिस्थियाँ, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएं

इकाई 4

- उपन्यास : उद्भव और विकास
- कहानी : उद्भव और विकास
- हिन्दी नाटक और रंगमंच का विकास
- हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाओं का विकास

अनुशंसित पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास- हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका- हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास- गणपती चंद्र गुप्त
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
7. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास- रामस्वरुप चतुर्वेदी
8. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास- विश्वनाथ त्रिपाठी
9. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएं- श्याम कश्यप
10. साहित्य और इतिहास दृष्टि- मैनेजर पाण्डेय
11. कविता के नए प्रतिमान- नामवर सिंह
12. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: **हिन्दी नाटक एवं एकाँकी HIN01112 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भारत में नाटकों की सुदीर्घ इतिहास एवं सुसमृद्ध परम्परा है। नाटक को पंचम वेद कहा गया है। इससे इसकी प्राचीनता, अलौकिकता तथा महत्ता का सहज ही परिचय मिल जाता है। भरतमुनि से पहले ही नाटक एवं रंगमंच का पूरा विकास हो चुका था जिसके प्रेरणा से उन्होंने नाट्यशास्त्र की रचना की। भास, कालिदास, अश्वघोष, भवभूति आदि महान् प्रतिभावान नाटककारों द्वारा इसका परिष्कार हुआ। एक लम्बी रिक्तता के बाद हिन्दी साहित्य में इसकी शुरुआत भी आधुनिक काल में ही हुआ जिसके कारणों में अंग्रेजों का समुन्नत नाट्य साहित्य भी था और पारसी रंगमंच भी। हिन्दी नाटक को विभिन्न नाटककारों ने नये आयाम दिए और इस विधा ने अपने नवीन क्षितिजों का स्पर्श किया।

Programme/course objective

साहित्य की अन्य विधाओं से नाटक की पृथकता को समझते हुए हिन्दी नाटकों के उद्भव और विकास प्रक्रिया से अवगत होना इस पत्र का लक्ष्य है। हिन्दी नाटक के विकास के विभिन्न पड़ावों को समझते हुए कुछ चयनित नाटककारों के नाटकों को पढ़ना तथा पठालोचना की दृष्टि विकसित करना इस पत्र का उद्देश्य है। नाटकों के साथ ही एकांकी ने भी विज्ञान के अद्भुत आविष्कारों, जीवन की आपाधापी, देश-काल एवं वातावरण से प्रभाव ग्रहण

करते हुए आधुनिक मानव एवं समाज की विभिन्न समस्याओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बना, इसको समझना ही इस पत्र का प्रयोजन है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य मे अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
2. अन्य गद्य विधाओं से नाटकों की पृथकता समझ सकेंगे तथा नाटक के तत्वों को समझ सकेंगे।
3. हिन्दी नाटकों के उद्भव और विकास प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे।
4. चयनित पाठों को पढ़ते हुए समीक्षात्मक सृष्टि विकसित होगी।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी नाटक एवं एकाँकी - HIN01112-MAJOR(4)

इकाई 1

- भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चंद्र

इकाई 2

- ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद

इकाई 3

- बकरी- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

इकाई 4

- स्ट्राइक – भुवनेश्वर
- दीपदान – रामकुमार वर्मा
- साहब को जुकाम है – उपेन्द्रनाथ अश्क

अनुशंसित पुस्तकें

1. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरुपक- हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. नाट्यशास्त्र- रेवा प्रसाद द्विवेदी
3. आधुनिक नाटक का मसीहा- मोहन राकेश
4. मोहन राकेश और उनके नाटक- गिरीश रस्तोगी
5. अंधायुग: पाठ और प्रदर्शन- जयदेव तनेजा
6. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच
7. हिन्दी नाटक: उद्भव और विकास- दशरथ ओझा
8. नाटककार प्रसाद: तब और अब- रमेश गौतम
9. नाटककार भारतेन्दु: नए संदर्भ नए विमर्श- रमेश गौतम
10. आधुनिक नाटक का अग्रदूत: मोहन राकेश- गोबिन्द चातक

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: **भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत HIN01114 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भारतीय काव्यशास्त्र काव्य और साहित्य का दर्शन तथा विज्ञान है। यह काव्य कृतियों के विश्लेषण के आधार पर समय-समय पर उद्भावित सिंद्धांतों की ज्ञान राशि है। यह पाठ्यक्रम भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा और उध्दावित सिंद्धांतों को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। विषय के रूप में इसे स्नातक के अध्ययन के पाठ्यक्रम में न केवल सम्मिलित किया गया है बल्कि काव्य प्रयोजनों,कव्यांगों, समीक्षशास्त्र को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

Programme/course objective

इस पाठ्यक्रम में हम काव्य क्या है? (काव्य लक्षण,काव्य हेतु,एवं काव्य प्रयोजन) को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। काव्य रसास्वादन कैसे होता है? कवयानन्द और रस निष्पत्ति, रस सिद्धान्त,साधारणीकरण को समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। काव्य की आत्मा केआर रूप में अलंकार सिद्धान्त,रीति,ध्वनि, औचित्य सिद्धांत के स्वरूप को समझना भी इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य होगा।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. काव्यशास्त्र की परिभाषा तथा उसके महत्व को समझ सकते हैं।
2. भारतीय काव्यशास्त्रीय परंपरा से अवगत होंगे।
3. विभिन्न आचार्यों के काव्य लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु संबंधी मान्यताओं को समझ सकेंगे

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत - HIN01114(4)

इकाई 1:-

- भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा (आचार्य भारत मुनि से पंडित जगन्नाथ तक)
- काव्य लक्षण, काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन

इकाई 2:-

- रस : परिभाषा एवं स्वरूप, रस के अंग, रस के भेद
- अलंकार : लक्षण और भेद अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, विभावना
- छंद : सवैया, चौपाई,रोला, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया, छप्पय

इकाई 3:-

- अरस्तू- अनुकरण संबंधी मान्यता, विरेचन, त्रासदी विवेचन
- लोंजायनस – उदात्त संबंधी मान्यता

इकाई 4:-

- कॉलरिज – कविता और काव्य भाषा संबंधी मान्यता, कल्पना सिद्धांत
- टी एस इलियट – परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिक काव्य का सिद्धांत

अनुशंसित पुस्तकें

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यसिद्धांत- गणपति चंद्रगुप्त
2. भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास- सत्यदेव शास्त्री
3. हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास-भागीरथ मिश्र
4. काव्य के रूप- गुलाब राय
5. भारतीय काव्यशास्त्र- योगेंद्र प्रताप सिंह
6. भारतीय काव्यशास्त्र- विश्वंभरनाथ उपाध्याय
7. काव्यशास्त्र- भागीरथ मिश्र
8. साहित्यालोचन- श्यामसुंदर दास
9. संस्कृत काव्यशास्त्र- बलदेव उपाध्याय
10. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज- राममूर्ति त्रिपाठी
11. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन

Course Structure/Syllabi

Type of Course: **Major**
Name of the Course: **भाषा विज्ञान HIN01116 (credit 4)**
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

Programme/course objective

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. हिंदी भाषा एवं साहित्य के उद्भव एवं विकास से अवगत होंगे।
2. हिंदी साहित्य के आदिकालीन एवं भक्तिकालीन प्रवृत्तियों परिस्थितियों से परिचित होंगे।
3. आदिकालीन एवं भक्तिकालीन दार्शनिक पृष्ठभूमि से परिचित होंगे ।
4. साहित्य के माध्यम से मूल्यों का सम्प्रेषण समाज में करने की योग्यता भी विद्यार्थी में विकसित होगी ताकि वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शों का भविष्य में अपने साथियों अथवा विद्यार्थियों के बीच प्रसारित प्रचारित कर सके।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

भाषा विज्ञान - HIN01116-MAJOR(4)

इकाई 1

- भाषा : परिभाषा और अभिलक्षण , भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना, भाषा प्रकार्य
- भाषा विज्ञान: स्वरूप और क्षेत्र , अध्ययन की दीक्षाएं- वर्णात्मक,ऐतिहासिक, तुलनात्मक

इकाई 2

- स्वन विज्ञान : उच्चारण प्रक्रिया, स्वन और स्वनिम, अक्षर , मान स्वर , स्वनियों का वर्गीकरण , स्वन परिवर्तन और कारण
- रूप विज्ञान: शब्द और पद, शब्द के प्रकार, रूप और रूपीम, अर्थ तत्व और सम्बद्ध तत्व

इकाई 3

- वाक्य विज्ञान: वाक्य, पदबंध, वाक्य प्रकार,वाक्य संरचना, प्रोक्ति
- अर्थ विज्ञान: अर्थ की अवधारणा ,शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ परिवर्तन की दीक्षाएं और कारण

इकाई 4

- भारतीय आर्य भाषाएं – वैदिक भाषा और संस्कृति,पालि,प्राकृत, अपभ्रंश, आधुनिक भारतीय भाषाएं
- हिन्दी की उपभाषाएं
- अवधी , ब्रज और खड़ी बोली की विशेषताएं
- देवनागरी लिपि: इतिहास , विशेषताएं और मानकीकारण

अनुशंसित पुस्तकें

1. भाषा विज्ञान की भूमिका- देवेन्द्रनाथ शर्मा
2. भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी
3. भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी
4. भाषा शास्त्र की रूपरेखा- उदय नारायण तिवारी

5. हिन्दी भाषा- हरदेव बाहरी
6. हिन्दी भाषा का विकास- देवेन्द्रनाथ शर्मा
7. भाषा और समाज- रामविलास शर्मा

Course Structure/Syllabi

Type of Course: minor
Name of the Course: हिन्दी नाटक एवं एकाँकी HIN02106 (credit 4)
Floated by/Proposed by: हिन्दी विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Who can teach this course: हिन्दी विभाग के शिक्षक

Overview

भारत में नाटकों की सुदीर्घ इतिहास एवं सुसमृद्ध परम्परा है। नाटक को पंचम वेद कहा गया है। इससे इसकी प्राचीनता, अलौकिकता तथा महत्ता का सहज ही परिचय मिल जाता है। भरतमुनि से पहले ही नाटक एवं रंगमंच का पूरा विकास हो चुका था जिसके प्रेरणा से उन्होंने नाट्यशास्त्र की रचना की। भास, कालिदास, अश्वघोष, भवभूति आदि महान् प्रतिभावान नाटककारों द्वारा इसका परिष्कार हुआ। एक लम्बी रिक्तता के बाद हिन्दी साहित्य में इसकी शुरुआत भी आधुनिक काल में ही हुआ जिसके कारणों में अंग्रेजों का समुन्नत नाट्य साहित्य भी था और पारसी रंगमंच भी। हिन्दी नाटक को विभिन्न नाटककारों ने नये आयाम दिए और इस विधा ने अपने नवीन क्षितिजों का स्पर्श किया।

Programme/course objective

साहित्य की अन्य विधाओं से नाटक की पृथकता को समझते हुए हिन्दी नाटकों के उद्भव और विकास प्रक्रिया से अवगत होना इस पत्र का लक्ष्य है। हिन्दी नाटक के विकास के विभिन्न पड़ावों को समझते हुए कुछ चयनित नाटककारों के नाटकों को पढ़ना तथा पठालोचना की दृष्टि विकसित करना इस पत्र का उद्देश्य है। नाटकों के साथ ही एकांकी ने भी विज्ञान के अद्भुत आविष्कारों, जीवन की आपाधापी, देश-काल एवं वातावरण से प्रभाव ग्रहण करते हुए आधुनिक मानव एवं समाज की विभिन्न समस्याओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बना, इसको समझना ही इस पत्र का प्रयोजन है।

Course features and learning outcome

Class room teaching, Audio video lecture using ICT, Online faculty for query solving

Following learning outcome is expected after completion of course:

1. दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य मे अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
2. अन्य गद्य विधाओं से नाटकों की पृथकता समझ सकेंगे तथा नाटक के तत्वों को समझ सकेंगे।

3. हिन्दी नाटकों के उद्भव और विकास प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे।
4. चयनित पाठों को पढ़ते हुए समीक्षात्मक सृष्टि विकसित होगी।

Who can attend/course audience

This course is suitable for students from Science, Social Science and Humanities background. CUJ Students of 1st - 3rd semester can attend the course.

Course eligibility/Pre-requisite

Pre-requsite course (level 100)

Course duration

One Semester

Course structure

हिन्दी नाटक एवं एकाँकी-HIN01106-MINOR(4)

इकाई 1

- हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास यात्रा

इकाई 2

- अंधेर नागरी- भारतेन्दु हरिश्चंद्र

इकाई 3

- ध्रुवस्वमीनी – जयशंकर प्रसाद

इकाई 4

- सुखी डाली – उपेन्द्र नाथ अश्क

अनुशंसित पुस्तकें

1. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरुपक- हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. नाट्यशास्त्र- रेवा प्रसाद द्विवेदी
3. आधुनिक नाटक का मसीहा- मोहन राकेश
4. मोहन राकेश और उनके नाटक- गिरीश रस्तोगी
5. अंधायुग: पाठ और प्रदर्शन- जयदेव तनेजा
6. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच
7. हिन्दी नाटक: उद्भव और विकास- दशरथ ओझा
8. नाटककार प्रसाद: तब और अब- रमेश गौतम
9. नाटककार भारतेन्दु: नए संदर्भ नए विमर्श- रमेश गौतम
10. आधुनिक नाटक का अग्रदूत: मोहन राकेश- गोबिन्द चातक